PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 7, ISSUE 4

आँग सान सु की और म्यानमार का लोकतांत्रिक संघर्ष : अतीत से वर्तमान तक

अरुण वाहुल
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
विवेकानंद महाविद्यालय औरंगाबाद
महाराष्ट्र भारत

प्रस्तावना

सम्पूर्ण एशिया में लोकतंत्र की परंपरा नहीं थी | एशिया में लोकतंत्र का पहला प्रयोग १९११ में डॉ सन येत सेनने चीन में किया था | पर यह पहला प्रयोग ज्यादा सफल नहीं हुआ लोकतंत्र का पौधा चीन की धरती पर टिक नहीं सका | बीसवी सदी में एशिया के अधिकांश देश प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से पश्चिमी देशो के अधीन थे | पश्चिमी देशो के संपर्क कारन एशियाई देशो को आधुनिक लोकतंत्र का प्रथम परिचय हुआ | कुछ देशोने लोकतंत्र को अपनी जमीं पर मजबूत करने का प्रयास करते हुए अपने लोगोको लोकतंत्र का महत्व समझाने का प्रयास करते हुए स्वाधीनता आन्दोलन उसी तरह संचालित किया गया | उस देश में भारत की गणना होती है | पर कुछ देशो में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली विदेशी शासन प्रणाली होने के कारन उसको नकारने की पुरजोर कोशिश की गई |

बीसवी शताब्दी में स्वाधीन होने वाले सभी देशो में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली द्वारा उनका राजनीतिक मार्गक्रमण शुरु हुआ | पर वहा ज्यादा देर तक लोकतंत्र की जडे नहीं जम सकी , खासकर भारत के पडोसी देशो में जितनी जल्दी लोकतंत्र की स्थापना हुइ उतनी ही जल्दी उसका नाश भी हुआ | लोकतांत्रिक तरीके दरकिनार करते हुए इन नव स्वाधीन देशो में तानाशाही की शुरुवात हुई | ऐसा ही एक देश म्यांनमार है | स्वाधीता के बाद लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की शुरुवात की लेकिन वहा लोकतंत्र अपनी जडे ज़माने में नाकामियाब रहा | एशियाई लोगो का रुजान संस्था के अपेक्षा

व्यक्तिपुजा में होने के कारन लोकतंत्र के बजाय एक व्यक्ति के हाथ में पूर्ण सत्ता देने का स्थायीभाव हो गया | भारत जैसा देश भी इसका अपवाद नहीं है | भारत के पडोसी देश म्यांमार में लोकतंत्र का अंत कैसे हुआ , उसकी पुनर्स्थापना हेतु किए गए प्रायसो का अध्ययन करने के उद्देश से यह शोध निबंध लिखा जा रहा है |

उनीस्वी शताब्दी में ब्रिटिशो ने म्यानमार पर विजय प्राप्त करके उसका स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त किया | इतना ही नहीं म्यानमार को भारतसे जोडा गया | इसलिए ब्रिटिश और भारतीयों के प्रति म्यानमार के लोगो के दिलो में नफरत का भाव पैदा हुआ | ब्रिटिशो के खिलाफ म्यानमार के राष्ट्रवाद की शुरुवात धार्मिक राष्ट्रवाद से हुई | आगे चलकर धार्मिक राष्ट्रवाद को फौजी राष्ट्रवाद का साथ प्राप्त हुआ | उसका नेतृत्व ऑंग सान (ऑंग सान सु की के पिताजी) ने किया था | स्वाधीनता आन्दोलन में यह दोनों राष्ट्रवाद के प्रारूप केंद्र में थे | १९०६ में म्यानमार में राष्ट्रवाद की शुरुवात हुई | उसकी शुरुवात बौदध भिक्षुने की थी | कुछ नोजवान लोगोने मिलकर यंग मेन्स बुद्धिस्ट असोसिएशन की स्थापना की[१]| ब्रिटिशों के विरोध में सबसे प्रथम भिक्षुयोने आवाज उठाई | म्यानमार के लोगो केलिए बौद्ध पैगोडा पवित्र माना जाता है | उसमे प्रवेश करते समय वह जूते चप्पल बाहेर उतर देते है | पर ब्रिटिशो ने इस परंपरा का पालन नहीं किया और उन्होंने जूते और चप्पल के साथ पैगोडा में प्रवेश करना शुरू किया | ब्रिटिशो द्वारा किया गया यह व्यवहार बौद्ध लोगो को और खासकर भिक्शुयो को पसंद नहीं आया | उन्होंने इसका विरोध करना शुरू किया १९१६ यंग मेन्स बुद्धिस्ट असोसिएशन ने एक बैठक बुलाई , इस बैठक में ब्रिटिशो को निवेदन किया गया की जूते चप्पल पहनकर पैगोडा में प्रवेश कर रहे लोगो को रोका जाए और इसको पूरा ख़तम करने केलिए एक कानून बनया जाए | पर ब्रिटिशों ने इसका बारेमे कुछ नहीं किया |[२] १९१९ में येरोपियन लोगो के एक समूहने जूते और चप्पल के साथ प्रवेश किया | यह देखकर जवान बौद्ध भिक्षु को घुस्सा आया और उन्होंने यूरोपियन लोगो पर हमला बोल दिया | इस घटना के बाद भिक्षु ऊ केताया को बंदी बनाकर आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई |[३] इस घटना से म्यानमार के राष्ट्रवाद का जन्म हुआ | धार्मिक राष्ट्रवाद का १९३७ तक केंद्र में था पर उसके बाद छात्र आन्दोलन के नेता ऑंग सान के नेतृत्व में राष्ट्रवादी आन्दोलन आगे बढा | १९३६ में छात्र आन्दोलन को छोड़ ऑंग सान डोहबामा आसी आयनों बर्मी (हम बर्मी) इस संघटन से जुड़ गए | १९३९ में ऑंग सान कम्युनिस्ट अध्ययन मंडल के सदस्य हो गए पर उन्हें मार्क्स का दर्शन पसंद नहीं आया | [४] १९३९ में दूसरा विश्व युद्ध शुरू हुआ , ब्रिटिशो को

संकट में देखकर ऑंग सान ने स्वाधीनता केलिए प्रयास तेज कर दिए | ब्रिटिश सरकारने उनको बंदी बनाने का अधेश दिया पर ऑंग सान को इसकी भनक पहले लग गई थी , इसलिए वह १९४० में चीन चले गए | चीन के कम्युनिस्टों की मदत से म्यानमार को स्वाधीन करने का प्रयास किया गया[५] पर वह सफल नहीं रहा | चीनी कम्युनिस्टों की मदत नहीं मिली तो जापान से संपर्क करनेका प्रयास किया गया | जापान के सेना प्रमुख ने ऑंग सान को म्यानमार के स्वाधीन आन्दोलन में साथ देना का वायदा किया |[६]

१९४१ में ऑंग सान म्यानमार लोट आये| उन्होंने थर्टी कोम्रेड संघ की स्थापना की | इसमे ३० सदस्य थे जिन्हें हेनोंन द्वीप पर फोजी प्रशिक्षण देने का कम जापान ने सुरु किया था |[७] दिसम्बर १९४१ में बर्मा इंडिपेंडेंट आर्मी का गठन किया गया , इस आर्मी के कमांडिंग ऑफीसर सुजुकी थे और चीफ ऑफ़ स्टाफ की जिमेवारी ऑंग सान पर थी | जापान और थर्टी कोम्रेड के बीच ऐसा तय हुआ था की जापान पूरा म्यानमार जीत कर वह बर्मन लोगो की सरकार स्थापित करेगा | लेकिन जापान पूरा म्यानमार जितने में नाकामियाब रहा , उसके चलते सुजुकी और ऑंग सान में मतभेद हुए | ऑंग सानने सुजुकी से सेना नियंत्रण निका लकर खुद पूरी सेना पर नियंत्रण स्थापित किया | मार्च १९४३ में ऑंग सान को जापान बुलाया गया | प्रधानमंत्री तेजोने जनवरी १९४४ में म्यानमार को आजाद देश घोषित किया जायगा ऐसा ऐलान कर दिया | इस पर ऑंग सानने कहा की १ अगस्त १९४४ में ही म्यानमार को आजाद देश घोषित किया जाए |[८] १ अगस्त १९४४ को जापान ने अपनी तरफ से म्यानमार को स्वाधीन राष्ट्र घोषित किया | अभी ब्रिटिश म्यानमार से नहीं गए थे | जापानने नए राष्ट्र की मुखिया की जिमेवारी दी और ऑंग सान को युद्धमंत्री बनया दिया |[९] दूसरी तरफ कम्युनिस्टोंने अलग राह पकड ली थी | ऑंग सानने उन सभी को एक किया |

१९४४ में जापान की सेना म्यानमार छोड़कर जानेवाली थी, पर वह वही डेटी रही| इसलिए १९४४ में एंटी फासिस्ट अर्गनायजेसन की स्थापना हुई | ऑंग सान और उनके साथियों ने ठान लिया की जापान की सेना को म्यानमार के बाहेर खदेड़ना है | दूसरी तरफ ऑंग सान की बातचीत अंग्रेजो के साथ चल रही थी | जापान को बाहेर करने केलिए और देश को उनके चंगुल से आजाद करने केलिए अगस्त १९४५ में एंटी फासिस्ट फ्रीडम लीग की स्थापना हुई | ऑंग सानने सेना का भी नाम बदलकर राष्ट्रीय सेना कर दिया | मे १९४५ में अंग्रेजो से बातचित का दूसरा चरण शुरू हुआ | अंग्रेजो के साथ चल रही बातचीत के दोरान म्यानमार के अल्पसंख्य वांशिक समुदायोने अपना हिसा मांगना शुरू

किया उन्होंने अपनी अलग मांगे रखी | ऑंग सानने भाप लिया की इनको शांत नहीं किया गया तो आगे चल कर देश के सामने बड़ी मुसीबत कड़ी हो सकती है , इसलिए उन्होंने सभी अल्पसंख्यक समुदायों को एक करने के उद्देश से शान राज्य में १९४६ को पंग्लोंग परिषद का आयोजन किया इस परिषद में सभी वांशिक समुदायों को स्वाधीन म्यानमार में उचित अवसर और अधिकार देने का वादा किया गया |[१०] सन १९४७ में म्यानमार का सविधान तैयार हुआ | इसमे संसदीय ग्रुप को स्वीकार किया गया था |[११] १९ जुलाई १९४७ को कार्यकारी परिषद की बैठक के दोरान एक आदमीने ऑंग सान और उनके छे साथियों पर गोली चलाकर हत्या कर दी |[१२] ऑंग सान की हत्या के बाद देश को सभालने का जिम्मा उ नु के पास आ गया | १७ अक्तूबर १९४७ को प्रधानमंत्री अटली और उ नु के बीच समझोता हुआ | इस समझोते से म्यानमार आजाद होने वाला था | इस समझोते पर ब्रिटिश संसद ने १७ नवेम्बर को मोहर लगा दी और ४ जनवरी १९४८ में म्यानमार आजाद हुआ |

म्यानमार का लोकतांत्रिक सफ़र

सन १९४८ में म्यानमार आजाद हुआ | पर नए स्वाधीन देश के सामने समस्याओ की कमी नहीं थी | ऐसे वातावरण में म्यानमार का लोकतांत्रिक सफ़र शुरू हुआ | देश में १९४८ को पहली बार चुनाव होने थे , पर देश में हो रहे तनावों की वजह से यह चुनाव कुछ समय के लिए मुल्तबी कर दिए | अंतरिम सरकार के प्रमुख होने के नाते ऊ नु ने देश को संभालने की पुरजोर कोशिश की , देश को शांत करने केलिए उन्होंने सेना सहारा लिया | अक्तूबर१९५१ में देश में पहला चुनाव तीन चरण में संपन्न हुआ | इस चुनाव में तीन प्रमुख पार्टियों ने हिस्सा लिया | इसमें एंटी फासिस्ट फ्रीडम पीपल्स लीग , बर्मा वर्कर्स एंड पिसंट पार्टी और इंडिपेंडेंट अरकान पार्लिमेंटरी ग्रुप शामिल थे | इस पहले चुनाव में एंटी फासिस्ट फ्रीडम पीपल्स लीग को लोगोने जित दिलाई | उनको १४७ सीटो पर विजय प्राप्त हुई \ विरोधी दलों को ३९ सीटो पर जित हासिल हुई | १६ मार्च १९५२ को अंतरिम सरकार बरखास्त करके चुनी हुई सरकार सत्ता में आ गई | देश के पहले प्रधानमंत्री की जिम्मेवारी ऊ नु के पास आ गई |[१२]

ऊ नु ने जैसे ही प्रधानमंत्री पद की शपथ ग्रहण की उसी दिन से भिक्शु संघने ब्रिटिश पूर्व समाज में बौद्ध धर्म की और भिक्शु की जो हैसियत थी उसको पुन: प्राप्त करने केलिए नए सरकार पर दबाव डालना शुरू किया | ऊ नु सरकारने भिक्शु संघ को नियंत्रण में लाने केलिए भिक्शु संघ की कार्यप्रणाली में सुधार करने की कोशिश शुरू की , उसके लिए सरकारने पंजीकरण की शुरुवात की , पर सरकार का

यह प्रयास सफल नहीं रहा | सरकार के इस रवैये के खिलाफ रंगून (आज का यागुन) में सभी महत्वपूर्ण मठोके भिक्शियो की एक बैठक बुलाई गई इस बैठक में भिक्शु संघ ने घोषित किया की गौतम बुद्ध ने संघ केलिए २२७ आचारण के नियम बनाये है | इस लिए बाकि किसी भी प्रकार के सुधार की और नियमोकी भिक्शु संघ केलिए कोई आवशकता नहीं है | सरकार को बौद्ध भिक्शु केलिए नियम बनाने का अधिकार नहीं है|[१३]

एक तरफ सरकार के खिलाफ बौद्ध भिक्शु खड़े हो रहे थे | तो दूसरी तरफ अल्पसंख्य वांशिक समुदाय अपनी मांगे मनवाने केलिए हथियार उठा लिए | इन समस्यों के साथ पाच साल गुजर गए | देश में १९५६ में दूसरी बार आम चुनाव हुए | इस चुनाव में फिरसे ऊ नु की पार्टी सत्ता में आ गयी | ऊ नु को बहुमत मिला था पर मतों का औसत कम हो गया था | दूसरी बार सत्ता में आते ही फिर से ऊ नु को अनेक समस्यों का सामना करना पड़ा | एक तरफ कम्युनिस्ट सरकार के विरोध में का म कर रहे थे, दूसरी तरफ आर्थिक संकट की वजह से देश में हिंसा , उठाव और दंगे हो रहे थे | कानून व्यवस्था ध्वस्त हो गई थी | देश को शांत करने के उद्धेश से अप्रेल १९५८ में ऊ नु ने कार्यकारी समिति की बैठक बुलाई गई , इस बैठक में ऊ नु ने कहा " अपने संघटन पर नियंत्रण स्थापित करने में मुझे कामयाबी नहीं मिली , इसलिए राष्ट्रने अपने उद्धेश गवा दिए है | सरकार पर लोगो का विश्वास नहीं रहा है" |[१४] ऊ नु के इस वक्तव्य से एंटी फासिस्ट फ्रीडम लीग में दरार आ गई | यह पार्टी दो खेमो बट गई | देश को इस अस्थिरता के दोरसे बाहर लाने केलिए देश की कमान जनरल ने विन के हाथो में सोपी गयी | ने विन की जिम्मेवारी देश में कमसे कम समय में देश को शांत कर आम चुनाव लेने की थी | २८ अक्तूबर १९५८ में जनरल ने विनने प्रधानमंत्री पद कमान अपने हाथो में ली | १८ महीनो में देश को शांत कर ने विनने देश में आम चुनाव केलिए माहोल तैयार किया | २९ फ़रवरी १९६० को देश में चुनाव हुआ इस चुनाव में फिरसे ऊ नु को बहुमत मिला | जैसे ही ऊ नु की सरकार स्थापित हुई उसी दिनसे देश में फिरसे वातावरण ख़राब होना शुरू हुआ | कम्युनिस्टों और वांशिक समुदायों ने सरकार का विरोध करना शुरू किया | देश में हर जगह से सरकार को विरोध हो रहा था इसलिए ऊ नु सरकारने लोगो अपनी और बुलाने केलिए लोकप्रिय निर्णय लेना शुरू किया | इसमे सबसे पहले २९ जनवरी १९६१ में देश का धर्मनिरपेक्ष स्वरुप नष्ट किया और बौद्ध धर्म को देश का अधिकृत धर्म घोषित किया |[१५] इसकी वजह से बौद्ध धर्मी खुश हुए पर बाकि के धर्म को यह निर्णय पसंत नहीं आया |

लोकतंत्र का अंत और फौजी तानाशाही

सन १९५८ में जनरल ने विन के हाथ में ऊ नु ने खुद सत्ता सोपी थी | १८ महीनो के कार्यकाल में देश में शांति स्थापित कर देश में आम चुना करवाए गए | पर इस १८ महीने में देश के सभी कार्यालयों में सभी पदों पर सेना के अधिकारी बिठाए गए थे | प्रशासन की खामिया उन्होंने पकड़ ली थी | १९६० के बाद ऊ नु को फिरसे देश संभालने में अड़चने आ रही थी , इस लिए १९६२ में जनरल ने विनने लोकतांत्रिक सरकार बरखास्त कर फौजी तानाशाही की शुरुवात की |[१६] जनरल ने विनने देश की सत्ता हाथ में लेते ही जुलाई १९६२ बर्मीज सोशालिस्ट प्रोग्राम पार्टी की स्थापना (बी. एस .पी .पी) की | सरकार चलाने केलिए २ मार्च १९६२ को क्रन्तिकारी परिषद का गठन किया | ने विन इस परिषद के अध्यक्ष थे | पुराना सविधान रद्द कर सभी अधिकार क्रन्तिकारी परिषद के हाथ में दिए गए | सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर सेना के अधिकारी बिठाए गए | लोकतांत्रिक समय पर टिपणी करते हुए जनरल ने विन ने कहा की लोकतंत्र का काल पिद्दवथा (कल्याणकारी राज्य) और हमारा काल पिददवच (वर्गविहीन समाज निर्माण करने केलिए किया गया कार्यक्रम) है |[१७]

१९६३ में ने विन ने बौद्ध धर्म का राष्ट्रीय धर्म का दर्जा समाप्त कर दिया और देश को फिरसे धर्मनिरपेक्ष बना दिया | ने विन के इस निर्णय से भिक्शु ऊ कथाया के अगवाई में भिक्शु संघ ने सेना का विरोध करना शुरू किया | १९६३ में ही सरकार ने आर्थिक सुधार करने की कोशिश शुरू की | उन्होंने तेल कंपनियों का राष्ट्रीयकरन किया , बैंको का भी राष्ट्रीयकरन किया | सभी प्रमुख कारखाने सरकारने अपने नियंत्रण में लिए |[१८] सभी जगह नियत्रंण प्राप्त करने के बाद ने विन सभी राजनितिक दलों को बी एस पी पी में शामिल होने को कहा , पर किसी भी दलने विलय करने इनकार कर दिया | इसके बावजूद ने विन ने बी इस पी पी को जनता की पार्टी घोषित किया |[१९] १९७१ में ने सविधान का मसौदा तैयार किया गया | अपनी सत्ता को सविधानिक प्रारूप देने का ने विन का प्रयास था | संविधान तयार होने के बाद ने विन और बाकि २० लोगोने सेना से सेवानिवृत्त होकर नए संविधानके अनुसार सरकार में शामिल हुए | यह सिर्फ दुनिया को दिखने केलिए था अभी भी सेना का पूरा नियंत्रण ने विन के पास ही था | इस नए संविधान के द्वारा नए प्रकार की तानाशाही म्यानमार में शुरू हुई |[२०] सरकार एक तरफ खुद की सत्ता संविधानिक बताने की कोशिश में थी और दूसरी तरफ

सरकार का विरोध भी शुरू हुआ था | कम्युनिस्टोंने उनके खिलाफ आन्दोलन छेड़ दिया था | यह हिंसात्मक संघर्ष था बर्मा के पेगु विभाग में जो संघर्ष हुआ उसमे १७२ लोगो की जान गयी |[२१]

छात्र आन्दोलन और ऑंग सान सू की का राजनिति में प्रवेश

१९८७ में म्यानमार में जीवन आवश्यक चीजो की किंमते बढ़ी इस बढती किंमतो को वजह से छात्र परेशान हो गए और उन्होंने इसके विरोध में छात्रों को संघठित किया | छात्रोंने बढती कीमतों को मुद्दा बनाकर देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था पुनरजीवित करने की भी मांग उठाई | इसी दौरान ऑंग सान सू की अपनी माँ का ख्याल रखने के लिए म्यानमार में वापस आयी थी | वह २८ साल बाद म्यानमार में आयी थी | जिस दवाखाने में सू की की माँ भरती थी उसी दवाखाने में छात्र आन्दोलन के छात्र जख्मी होकर भरती हो रह थे| देश में हो रह घटनाओं से सू की अवगत थी | छात्र आंदोलन गति पकड़ता गया इस वजह से सरकार पर दबव बढ़ता गया | इस २३ जुलाई १९८८ को जनरल ने विन अध्यक्ष पद का इस्तीफा दे दिया | उन्होंने देख लिया था की छात्रों का आन्दोलन दिन ब दिन बढता जा रहा है | ने विन की जगह पर ऊ सेईन लवीन नियुक्ति हुई | छात्रों और लोगो को लगा की बहोत जल्द देश में लोकतंत्र की स्थापन होगी , पर ऐसा कुछ हुआ नहीं | आन्दोलन को कुचलने केलिए ३ अगस्त को पुरे देश में मार्शल लो लागु कर दिया | देश के सभी विश्वविद्यालय बंद कर दिए | सरकार के इस निर्णय के खिलाफ ८ अगस्त को १९८८ को पुरे देश में आन्दोलन हुआ | रंगून में ८ अगस्त को हजारो की संख्या में लोग सरकार के खिलाफ रास्ते पर उतरे सरकारने सेना के माध्यमसे आन्दोलन खत्म करने की कोशिश की रंगून में भीड़ पर सेनाने गोली चलाई जिसमे ३००० लोगो की जान गई |[२२] इस घटना को चार आठ की घटना (८-८-८८) कहा जाता है | ३१४ शहरो मे से २०० शहरोमे सरकार के खिलाफ आन्दोलन हुए |

८ अगस्त की घटनासे सू की आहत हुई | सू की रंगून विश्वविद्यालय के परिसर में निवास कर रही थी, वह उनसे बोहत सारे लोग मिलने आया करते थे | १५ अगस्त १९८८ में उनसे मिलने रंगून विशवविद्यालय के इतिहास के प्रोफेसर पोहचे , उन्होंने सू की को देश में हो रहे आन्दोलन का नेतृत्व करने नौता दिया , पर सू की ने माँ की बीमारी की वजह से इनकार कर दिया | उसी दिन सू की ने बी. एस. पी. पी. को एक पत्र लिखा इसमे उन्होंने देश में शांति स्थापित कर संसदीय चुनाव करने और बंदी बनाये गए छात्रों को छोड़ने [२३] की मांग राखी | इस पत्र का सरकार पर कुछ असर नहीं हुआ |

इसके बाद भी छात्रों पर गोलिया चलाई गई | इस घटना के बाद सु की ने लोकतांत्रिक आन्दोलन का नेतृत्व करने का नौता स्वीकार किया |

२४ अगस्त १९८८ को रंगून जनरल हॉस्पिटल के सामने ऊ विन खेट ने एक सभा का आयोजन किया | ऊ विन खेट छात्रों को मार्गदर्शन करने वाले नेता थे | इसी सभा में सू की ने अपन पहला राजनितिक भाषण किया | इसमे उन्होंने कहा " मुझे लोकतंत्र की स्थापन करने केलिए लोगो का साथ चाहिए "|[२४] यह अत्यंत छोटा भाषण था | पर इस भाषण से लोगो यह पता चला की ऑंग सान की बेटी लोकतंत्र बचने केलिए आई है | २६ अगस्त १९८८ को स्वेडगाव पैगोडा के परिसर में सू की पहली बड़ी सभा का आयोजन किया गया | इस सभा को रोकने केलिए सेना ने बहोत प्रयास किए पर कुछ फायदा नहीं हुआ | सू की इस पहली बड़ी सभा में १० लाख लोग शामिल थे | इस सभामे सू की ने लोगो को सम्भोधित करते हुए कहा की " इस सभा का उद्देश पूरी दुनिया को यह दिखाना है की म्यानमार के लोगो की इच्छा क्या है | लोगोमे परिशर्म करके लोकतंत्र की स्थापना करने की जिद्द है | मे परदेश में रही हु , मैंने विदेशी आदमीसे शादी की है , पर यह चीजे कभी भी मेरे देश प्रेम में बाधा नही बनी है | मेरे बारेमे लोग कहते है की मुझे मेरे देश बारेमे कुछ पता नहीं , पर मे उन्हें बता देना चाहती हु की मुझे मेरे देश के बारेमे सब पता है | मेरे पिताजीने देश में पहले स्वाधीनता आन्दोलन का नेतृत्व किया था | अब देश में दुसरे स्वाधीनता आन्दोलन की जरुरत है"|[२५] इस भाषण से म्यानमार के लोगो को उनका नेता मिला गया था | सू की वजह से देश अलग उर्जा समायी |

१ सितम्बर १९८८ को बी एस पी पी के अध्यक्ष डॉ माँउंग माँउंगने देश को संभोधित किया उसमे उन्होंने कहा " १२ तारीख को बी एस पी पी की बैठक बुलाई गई है| इस बैठक में चुनाव होने चाहिए की नहीं इस पर जनमत लेने के विषय में चर्चा होनी है | जनमत लिया गया और जनमत चुनाव लेने के पक्ष में आया तो चुनाव होंगे"|[२६] इसके बाद सरकार ने सभी दलों को पंजीकरण करने का आदेश दिया | २७ सितम्बर १९८८ को सू की ने नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी पार्टी की स्थापना की और उसका पंजीकरण भी करा लिया | देश में चुनाव का माहोल तैयार हो रहा था | इसलिए सू की ने पुरे देश का दौरा किया सभी लोगो से अपील की आने वाले चुनाव में नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी को वोट डाले | इसके साथ ही सभी लोगो से आग्रह किया की आपसी मनमुटाव छोड़ कर लोकतंत्र की स्थापित करने केलिए एक होने की जरुरत है | सू की का बढ़ता जनाधार देखकर फौज ने उनकी सभा में लोग न जाए इसका प्रयास किया पर इसका ज्यादा फायदा नहीं हुआ | सू की रुकने का नाम नहीं ले रही थी इसलिए

फौज ने उन्हें मा रने का भी प्रयास किया इसमे भी वे नाकामियाब रहे | इसलिए उन्होंने २० जुलाई १९८९ को सू की को उनके घर में ही स्थानबद्ध किया |उनके साथ उनके साथियों को भी हिरासत में लिया था | उन साथियों को फौज ने अत्यंत अमानवीय बर्ताव किया इसकी खबर सू की को लगी तो उन्होंने इसका विरोध करने केलिए गांधीजी की तरह अनशन का मार्ग अपनाया , उन्होंने १२ दिनों तक भूक हड़ताल की सरकार झुकना पड़ा और बाकि के कैदियों साधारण जेल में रखा गया |

सू की को स्थानबद्ध करने के बाद २७ मई १९९० में आम चुनाव हुए | संसद की ४८५ सीटो पर वोट डाले गए इसमे ९३ राजनितिक दलों ने हिस्सा लिया | जून में चुनाव के नतीजे आये | नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी को ३९२ सीटो पर विजय प्राप्त हुई |[२७] चुनाव में बहुमत नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी पार्टी को मिला था पर उनके हाथो में देश की सत्ता नहीं दी गई | सेना की तरफ से कहा गया की यह चुनाव संविधान बनाने उद्देश्य से लोगो की राय लेने केलिए था इसलिए सत्ता का हस्तांतरण करने का सवाल ही पैदा नहीं होता| [२८] सू की स्थानबद्ध थी पर दुनिया भर में उनके का म और त्याग की चर्चा हो रही थी | १९९१ में उन्हें नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया |पर वह पुरस्कार लेने वह जा नहीं सकी|

१९९२ में सेना ने स्टेट लॉ एंड आर्डर रेस्ट्रोरेशन कौंसिल की स्थापना की यह लोगो को दिखाने केलिए था की देश में परिवर्तन हो रहा है | पर इसे देश में कोई परिवर्तन नहीं हुआ | दिन ब दिन फौजी तानाशाही और क्रूर हो रही थी | नाम बदलकर लोगो और दुनिया को अलग तरह से फौजी तानाशाही को दिखने की कोशिश हो रही थी | ऐसे ही १९९७ में भी किया गया स्टेट लॉ एंड आर्डर रेस्ट्रोरेशन कौंसिल की जगह स्टेट पीस एंड डेवलपमेंट कौंसिल बनायीं गई इसमे फौज के ४० लोगो की कैबिनेट बनायी गई थी प्रधानमत्री जिम्मेवारी थान स्वे के पास थी |[२९]

२००८ का संविधान और २०१० का चुनाव

फौजी सरकार अलग अलग नाम देकर लोगो को परिवर्तन होने का एहसास दे रही थी | पर लोगो की असलियत पता थी की देश में फौज के ही हाथ में सत्ता है | लोग गोली के डर से विरोध नहीं कर रहे थे | २००७ में देश में फिरसे महेगांई बढ़ गई इसके खिलाफ कोई बोलने को तैयार नहीं था, सू की बाहर नहीं थी , एन एल डी कमजोर हो चुकी थी | इसलिए इस बार महेगांई के विरोध में भिक्शु संघ सामने आया और उसने सरकार खिलाफ मोर्चा खोल दिया | भिक्शुयो को बाहेरआ ते देख नौजवान भी उनके समर्थन में बाहर आये | २०० जगह बौद्ध भिक्शुयो के साथ लोगोने सरकार के विरुद्ध

आन्दोलन किया १९८८ के बाद यह सबसे बड़ा विद्रोह था | सरकारने लोगो का घुस्सा शांत करने केलिए २००७ में एक संविधान आयोग गठित किया | इस आयोगने मई २००८ में नया संविधान तैयार कर लिया | इस संविधान को जनता का समर्थन है या नहीं यह जानने केलिए जनमत लिया गया | ९९ प्रतिशत लोगोने संविधान के पक्ष में अपना मत दिया | यह जनमत भी फौज ने लोगो को डराकार पास करवा लिया था | क्योंकि यह संविधान फौज को विशेषाधिकार दे रहा था | संसद की २५ प्रतिशत सीटे उनके लिए आरक्षित थी |संविधान का सुधार भी उनकी रजामंदी के बगैर नहीं हो सकता था | २०१० में देश में १९९० के बाद चुनाव होने थे इसलिए फौज ने खुद की राजनितिक पार्टी बना ली उसका नाम यूनियन सॉलिडॉरीटी एंड डेवलपमेंट पार्टी रखा गया |[३०] इस चुनाव में एन एल डी शामिल नहीं हो रहा था उन्होंने सू की को मुक्त करने की मांग की अगर उन्हें नहीं छोड़ा गया तो एन एल डी चुनाव का बहिष्कार कर देगी | सरकार ने उनकी यह मांग ख़ारिज कर दी | इसलिए एन एल डी ने चुनाव का बहिष्कार कर दिया | फौज को यही चाहिए था | चुनाव में एन एल डी नहीं होने की वजह से यह चुना फौज केलिए आसान हो गया | ५ और ६ नवम्बर को वोट डाले जाने थे , पर ३ और ४ तारीख को ही अग्रिम वोट डाले गए | जब ५ और ६ को लोग वोट डालने गए तो वहा पर १०० प्रतिशत वोट डाले गए ऐसा बोर्ड खड़ा कर दिया गया था सभी बूथ १० बजे बंद कर दिए | फौज ने अग्रिम वोट डालने की व्यवस्था कर पूरा चुनाव अपनी ओर मोड़ लिया था |

चुनाव ख़त्म हो चूका था नतीजे क्या आने थे यह फौज को पता था इसलिए अब सू की का कोई खतरा नजर नहीं आ रहा था इसलिए १३ नवम्बर २०२० को सू को मुक्त कर दिया | २०१० के चुनाव में यूनियन सॉलिडॉरीटी एंड डेवलपमेंट पार्टी को हाउस ऑफ नॅशनलिटिज के २२४ सीटो में से १२९ सीटे हासिल हुई (५६ सीटे फौज केलिए आरक्षित थी) और हाउस ऑफ रेप्रेझेंटेटिव ४४६ सीटो में से २५९ सी टे हासिल हुई (११० सीटे फौज केलिए आरक्षित थी) [३१] नए संविधान के अनुसार बहुमत प्राप्त पार्टी को ९० दिनों के भीतर सरकार बनाने का दावा करना था | पर फौज सरकार बनाने का सा हस नहीं कर पा रही थी उनको आशंका थी की लोगो की प्रतिक्रियाएं क्या होंगी | थोडा समय बीतने के बाद ३१ जनवरी २०११ को सबह ८.५० मिनट पर सरकार स्थापित हुई | लोगो को इसकी खबर एक किताब प्रकशित कर दी गयी थी इस किताब पर जनरल थान स्वे के हस्तक्षर थे |[३२] देश में नई सरकार स्थापित हो गयी थी अंतर्राष्ट्रीय मिडियाने इसे अर्ध लोकतांत्रिक राज्य कहा | देश में हो रहे राजनितिक परिवर्तन में सू की की कोई भूमिका नहीं थी इसलिए उन्होंने खुद को वांशिक समुदाय के

समस्यों के साथ व्यस्त कर लिया | सभी समुदायों को एक करने के उद्देश से उन्होंने दूसरी पांगलॉन्ग परिषद बुलाने का एलान किया |

नए सरकार में प्रधानमत्री की जिम्मेवारी थेईन सेईन को सोपी गई जी थान स्वे के करीबी थे | थेईन सेईन से प्रधानमंत्री बनते ही विपक्ष के साथ बातचीत करनी शुरू की उन्होंने सू की के साथ पहली बैठक की | इसमे उन्होंने देश में हो रहे परिवर्तन में सू की के साथ की मांग की | इस बैठक के बाद एन एल डी को फिरसे | पंजीकरण करने की सहूलियत दी गई| चुनाव में फिरसे शामिल होने का मार्ग खुल गया | २०१२ में ४५ सीटो केलिए उपचुनाव होने थे | एन एल डीने यह चुनाव में हिस्सा लेने का फैसला लिया | सू की भी इस चुनाव में प्रत्याशी बनी उन्होंने कव्हयुम से अपना परचा दाखिल किया | एन एल डी ने ४५ सीटो में से ४३ सीटे जित कर संसद में प्रवेश किया | सू की संसद में पोहची यह दृश्य देखने लायक था | संसद में फौजी कपडे में बैठे सांसदो के बीच सु की और उनके साथी पारम्परिक बर्मी कपड़ो में थे |[33] ४३ सीटो पर विजय हासिल कर सू की ने सरकार और सेना की चिंताबढ़ा दी थी| इसलिए सरकार ने २०१५ में होनेवाले चुनाव खतरा नजर आने लगा | उन्होंने सू की को रोकने केलिए देश बाकि के आन्दोलनों की हवा देनेका कम शुरू किया | फौज ने कट्टर बौद्ध भिक्शु आशिंन विरथू को जेल से सजा पूरी होने से पहले छोड़ दिया उसे २००३ में २५ सालो की सजा सुनाई गयी थी | उसने बाहर आते ही रोहिंग्या देश केलिए बड़ा खतरा है बौद्ध धर्म को अगर बचाना है तो फौज को सबने समर्थन देना चाहिए ऐसा उसने आवाहन किया | रखींन राज्य में २०१२ में फिरसे रोहिंग्या के खिलाफ हिंसा शुरू हुई | देश में धार्मिक संघर्ष का माहोल तैयार हो रहा था | धार्मिक संघर्ष का मुद्दा केंद्र में आ ते ही देश की बाकि समस्यों से लोगो की नजर हट गयी| लोकतांत्रिक संघर्ष को कमजोर करने का यह सेना का प्रयास था और वह कही हद तक इसमे कामियाब हो गए थे |

२०१५ का चुनाव और एन एल डी की सरकार

सू की बाहर आने के बाद सक्रीय हो गई थी | २०१२ से २०१५ तक देश में फिरसे लोकतंत्र का आन्दोलन संघटित करने का प्रयास उन्होंने किया था | देश में फिरसे सत्ता मिल जाएगी इस उद्देश से ८ नवम्बर २०१५ की देश में चुनाव करवाये गए | इस बार एन एल डी ने इस चुनाव में हिस्सा लिया | सू की ने जी जानसे प्रचार किया, लोगो को लोकतंत्र की जरुरत बताई | लोगो ने अति उत्साह से वोट डाले | इस चुनाव में एन एल डी को स्पष्ट बहुमत मिला | एन एल डी को ऊपरी सदन में १३५ सीटे

मिली और निचले सदन में २५५ सीटे मिली | पर सेना सत्ता का हस्तांतरण करेगी या नहीं इसमे आशंका थी | पर इस बार फौज ने एन एल डी को सत्ता सोपी | लोगो को ख़ुशी हुई की सू की देश की प्रमुख बनेगी पर २००८ के संविधान की वजह से सू की सरकार में शामिल नहीं हो सकती थी | (संविधान के अनुसार २० साल देश के बाहर रह रहे व्यक्ति को और विदेशी व्यक्ति से शादी किए हुए व्यक्ति को देश में कोई संविधानिक पद नहीं मिलेगा) सू की जित कर भी कुछ नहीं कर सकती थी | २०१६ में एन एल डी की हाटीन क्यावा के नेतृत्व में सरकार बनी | अप्रैल २०१६ में संविधान सुधार कर सू की केलिए नॅशनल अड़व्हायिजर का पद तैयार किया|

एन एल डी की सत्ता आते ही ९६९ के संघटनने रखीन राज्य में रोहिंग्या के खिलाफ मोर्चा खोला | इसमे रोहिंग्या को देश से बाहर खदेड़ने केलिए ९६९ ने मुहीम चलाई | इसमे सू की कुछ नहीं कर सकती थी | क्योकि म्यानमार में सत्ता के दो केंद्र थे | एक एन एल डी की सरकार और दूसरा तातमदवा | तातमदवा के पास ज्यादा अधिकार थे | उनके पास रक्षा मंत्रालय , गृह विभाग, पुलिस यह सब का नियंत्रण था इसमे सू की और उनकी सरकार किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकती थी | रोहिंग्या की समस्या में सू की की भूमिका पुलिस के बाद आती थी | सू की पर रोहिंग्या की वजह से हर तरफ से आरोप होने लगे की सू की रोहिंग्या मुस्लिमो का रक्षा करने में नाकामियाब रही और सरकार ही रोहिंग्या को बाहर निकलना चाहती है | लोगो ने यहाँ तक कह दिया की उनका नोबेल पुरस्कार भी वापस लेना चाहिए | पर इस आरोप में तथ्य नहीं थे | सू की चाह कर भी रोहिंग्याके सवाल पर कुछ नहीं कह सकती थी | बाहेर से देखने वालो को यह लग सकता है की देश की सेना सू की के सरकार के नियंत्रण में थी| और सेना अगर रोहिंग्या के खिलाफ कम कर रही थी तो सू की ने उनको रोका क्यों नहीं ? इसका मतलब सू की भी रोहिंग्या के खात्मे में उनसे मिली हुई थी | पर यह सच नहीं था सू की का नियंत्रण सेना पर नहीं था | यह बात सच है की रोहिंग्या के समर्थन में वह ज्यादा नहीं बोली क्योकि आशिंन विरथूने और ९६९ संघटन ने एन एल डी मुस्लिमो की पार्टी कहना शुरू किया था | सू का अलग दृष्टीकोन था | उनका कहना था की अगर संविधानिक सुधार हुआ और सेना को मिले हुए सभी विशेषाधिकार समाप्त हुए तो सरकार को देश में परिवर्तन करने का मौका मिलेगा इसलिए वह संविधानिक सुधार पर जोर दे रही थी |[३४] २०१६ में सू की ने सविधान सुधार आन्दोलन शुरू किया देश में माहोल तैयार करने की कोशिश की | एक आयोग घठित हुआ जिसमे सेना के भी सदस्य थे | सेना ने इसका विरोध किया और सू की को धमकी दी की अगर सुधार हुआ

तो इसके नतीजे अच्छे नहीं होंगे | ९६९ संघटन ने सू की खिलाफ आवाज उठाई | सू की बाहरी देशो के हाथो बीके हुए है इनकी वजह से बौद्ध धर्म खतरे में है |[३५]

सू की ने म्यानमार के बाहर गये हुए रोहिंग्या से अपील की वह वापस आ जाए | पर कोई वापस आने को तैयार नहीं था और रखींन राज्य में भी लोग नहीं चा ह रहे थे की कोई रोहिंग्या वापस आये | सू की इस अपील के बाद रोहिंग्या पर २०१६ और २०१७ में दो बड़े हमले हुए | फिरसे हजारो की संख्या में रोहिंग्या बांग्लादेश में आश्रय लेने पोहचे | फिरसे लोगे सू की पर आरोप हुए | उनपर अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में नरसंहार का मुकदमा चला | ९६९ और सेना को यही चाहिए था की किसी तरह सू की को मिल रहा समर्थन कम हो | सू की स्थानबद्ध थी तब अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने और मिडिया ने सू की का समर्थन किया था | हर जगह से उन्हें पुरस्कारो से नवाजा गया था | पर अब वही लोग सू की पर आरोप कर रहे थे की उसकी वजह से रोहिंग्या खतरे में पड गए है | यह सेना और देश के कट्टर संघठनो की जित थी | सू की पर आरोपो का सिलसिला शुरू रहा, इसी बीच ८ नवम्बर २०२० को देश में चुनाव हुए सेना और ९६९ को लगा था की एन एल डी को अब समर्थन नहीं मिलेगा और सेना की पार्टी की सरकार बनेगी| इसलिए तत्कालीन सेना प्रमुख मिन मॉऊग हिलांग को सत्ता हासिल करनी थी इसलिए उन्होंने खुद का कार्यकाल ५ साल केलिए और बढा दिया | पर उनके मुताबिक कुछ नहीं हुआ | देश की जनता ने सेना की पार्टी को नकार कर फिरसे सू की के पार्टी को (१३८ और २५८ सीटे) बहुमत से जीता दिया |[३६] सेना प्रमुखने एन एल डी पर आरोप लगाया और की उन्होंने चुनाव में धान्दाली की है | वह यह चुनाव स्वीकार नहीं करते | २ फ़रवरी २०२१ को सेना ने फिरसे देश पर नियंत्रण स्थापित किया सू की समेत एन एल डी के सभी नेताओ को हिरासत में लिया | सू की को उन्ही के घर में स्थानबद्ध कर दिया | देश में एक साल केलिए एमर्जंसी लागु की | देश में १० साल के अर्ध लोकतांत्रिक सरकार का दौर भी ख़त्म हुआ और म्यानमार में फिरसे फौजी तानाशाही शुरू हुई |

निष्कर्ष

म्यानमार में कभी भी लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास नहीं हुआ | लोकतंत्र को हमेशा से बाहर की व्यवस्था कहा गया है | इसलिए देश की राजनीती में इसका फायद ले कर भिक्शु संघ और फौजने अपना राजनैतिक हस्तक्षेप जरी रखा है |इन दोनों को राजनीती से किसी ने अलग करने की कोशिश

की तो यह उसके खिलाफ खड़े हो जाते है | जब सू की ने लोकतांत्रिक आन्दोलन का नेतृत्व किया तब भिक्शु संघ ने सू की का समर्थन किया | क्योकि सू की ने लोकतांत्रिक मूल्यों को बौद्ध धर्मसे जोड़ा | उन्होंने कहा था की लोकतंत्र बाहर की चीज नहीं है | यह हजारो सालोसे बौद्ध धर्म के रूप में म्यानमार में विद्यमान है | इसलिए बौद्ध होना मतलब लोकतांत्रिक होना है | इस वजह से भिक्शु सू की पर खुश थे | पर जब सू की ने धर्मनिरपेक्ष राज्य की बात करनी शुरू की तब भिक्शु संघ निराश हुआ और उन्होंने सू की समर्थन वापस लिया और अपनी अलग राह पकड़ी | म्यानमार की राजनीती में फौज का महत्व हमेशासे रहा है | उन्हें लगता है की फौज की वजह से ही देश को आज़ादी मिली थी | तो इसलिए देश की राजनीती में फौज का महत्व होना चाहिए | इसलिए वह राजनीती से दूर नहीं रह सकते | २००८ के बाद उन्होंने देश में जो राजनैतिक प्रारूप तैयार किया है | उससे उनको विशेषाधिकार मिले है | सू की का संघर्ष अब यही है की उनको मिले हुए विशेषाधिकार समाप्त कर उन्हें फिरसे फौजी छावनी में वापस भेजना है | इसी आशंका से २ फ़रवरी २०२१ को सू की को स्थानबद्ध कर देश में फिरसे फौजी तानाशाही सुरु हुई है |

सन्दर्भ

१ ऑंग सान सू की, फ्रीडम फ्रॉम फियर एंड आदर रायटिंगस, लन्दन ,१९९५ , पृ ११३.
२ डोनाल्ड स्मिथ , रिलिजन एंड पॉलिटिक्स इन बर्मा, न्यूजर्सी ,१९६५, पृ ८८
३ वही
४ ऑंग सान सू की, पृ ११
५ वही, पृ १४.
६ वही
७ वही
८ वही, पृ २०.
९ वही
१० वही, पृ ३३
११ डोहनिसन एफ.एस .व्ही, नेशन ऑफ मॉडर्न वर्ल्ड , लन्दन , १९७०, पृ १४१ .
१२ तुरनन जॉर्ज ,एम. सी , गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स ऑफ़ साऊथ इस्ट एशिया, १९६४, पृ ११५.
१३ वही
१४ शरण पी. एस , गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स ऑफ सिलेक्ट एशियन कंट्रीज, देल्ही , १९९०, पृ ३०.

१५ सिल्वरस्टिन जोसेफ , मिल्ट्री रुल एंड थे पॉलिटिक्स ऑफ स्टागनेशन , लन्दन , १९७७, पृ ६५

१६ ब्रेटिल लिट्नर , थे राईज एंड फ़ॉल ऑफ़ थे कम्युनिष्ठ पार्टी एन बर्मा , न्यूयॉर्क, १९९०, पृ, ३९

१७ हॉल. डी . सी . ई , ए हिस्ट्री ऑफ साऊथ ईस्ट एशिया , लन्दन, १९७०, पृ ६६८

१८ देसाई डब्लू एस, अ पझंट ऑफ बर्मीज हिस्ट्री, मुंबई ,१९६१,पृ ८७

१९ वही , पृ ८८

२० शरण , पृ २४.

२१ सिल्वरस्टिन,पृ ८१

२२ विन्टले जस्टिन, परफेक्ट होस्टेज अ लाईफ ऑफ ऑंग सान सू की बर्माज प्रिझनर ऑफ़ कोनशन्स , हचिन्सन , २००७, पृ २५९ .

२३ सू की , पृ १२०

२४ विन्टले , २६२.

२५ ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन, समरी ऑफ़ वर्ल्ड ब्राडकास्ट, एफ/ई/बी, ६सितम्बर १९८८, पृ २४९.

२६ लिंग ब्रिटीना, ऑंग सान सू की: स्टॉडिंग अप फॉर डेमोक्रसी एन बर्मा , १९९९, पृ ५९.

२७ सू की, पृ २००.

२८ विन्टले, पृ ३४१

२९ मया माँउंग, द बर्मा रोड थे पास्ट , एशियन सर्वे , मार्च अप्रेल १९९९, पृ २६६.

३० www.crs.org.

३१ www.Burmesegenralelection2010.

३२ खिर्स्तोफर लेन , जॉन असविन , बर्मा /म्यानमार आल्मेंट्स : सर्चिंग फॉर थे राईट रेमेडी , २००७, पृ ७७

३३ इंटरनॅशनल क्रायसिस ग्रुप , रिफार्म एन म्यानमार : वन ईयर ऑन , जकार्ता २०१२ , पृ २

३४ अरुण वाहुल , भूमीच्या शोधात रोहिंग्या मुस्लिम, औरंगाबाद , २०२१ , पृ ३४

३५ वही

३६ https://www.lowyinstitute.org/the-interpreter/the-gloom-about-myanmar-economy